काव्य-लक्षण : संस्कृत काव्यशास्त्रियों का मत

~ डॉ. अमरेन्द्र नाथ त्रिपाठी

(हिंदी विभाग, एसजीजीएस कॉलेज, पटना सिटी)

[कक्षा, स्नातक - तृतीय वर्ष (प्रतिष्ठा), में पढ़ाए गए को दुहराने (रिवीजन) के लिए यह आलेख]

वह क्या चीज या वस्तु है जिसके होने से हम तय करते हैं कि यह तो काव्य या कविता है? आखिर वह है क्या जो किसी बात को कविता बनाता है? इस बात का जवाब देने के लिए कुछ लक्षण बताये गए हैं जिनसे हम कविता का होना निश्चित करते हैं। ये लक्षण काव्य-लक्षण कहे जाते हैं। काव्य लक्षणों को बताने की परंपरा बड़ी लम्बी है जो हमें संस्कृत के विद्वानों से लेकर आज तक एक निरंतर विकसित होती बहस के रूप में दिखाई देती है।

संस्कृत के काव्यशास्त्रियों द्वारा बताये गए काव्य लक्षणों पर बात करने के पहले यह बताना उचित होगा कि भारतीय साहित्य चिंतन में काव्य का मतलब था : किसी भी विधा में किया जाने वाला रचनात्मक या सृजनात्मक साहित्य। नाटक जैसी विधा को भी श्रेष्ठ काव्य कहा गया है। 'काव्येषु नाटकं रम्यं' जैसी सूक्तियों से यह बात समझी जा सकती है।

काव्य लक्षण पर बात करने के क्रम में सबसे पहले काव्य शास्त्री भामह की बात रखना उचित होगा। भामह की बात सुनकर लगता है कि पहले यह बहस लोगों में चल रही थी कि काव्य शब्दों में होता है या अर्थों में होता है। भामह ने दोनों का महत्व स्वीकार किया। उन्होंने कहा कि काव्य शब्द और अर्थ का सहभाव है। यानी दोनों का साथ होना, शब्द और अर्थ दोनों की सुंदरता का साथ-साथ होना, काव्य है। 'काव्यालंकार' ग्रन्थ में उनका कथन है : शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्।

आचार्य दण्डी का मानना है कि शब्द-अर्थ-रस-सौंदर्य से विशिष्ट पदावली ही काव्य है। वामन ने माना है कि काव्य अलंकार तत्त्व के कारण ही ग्राह्य होते हैं। ये अलंकारों को कविता के लिए जरूरी मानते हैं। इनका कथन है : काव्यं ग्राह्यमलंकारात्। सौंदर्यमलंकाराः। इनकी मान्यता में गुण और अलंकार से युक्त शब्दार्थ काव्य है।

© Dr. Amrendra N. Tripathi, SGGS College

इस तरह हम देखते हैं कि अब तक शब्द और अर्थ के अलंकारों से काव्य को परिभाषित करने की कोशिश की गयी। इस क्रम में काव्य के आतंरिक सौंदर्य के बजाय चर्चा बाहरी लक्षणों पर अधिक होती गयी। नवीं शताब्दी के आनदवर्धन ने इसमें हस्तक्षेप किया। आनंदवर्धन ने काव्य की आत्मा को ध्वनि से जोड़ते हुए अलंकार का काव्य से अलगाव दिखाया। उन्होंने रस और काव्यानुभूति को महत्व दिया। रस और अनुभूति पर जोर देकर उन्होंने काव्य लक्षण बताने की नयी लकीर खींची।

आगे आचार्य कुंतक ने कहा कि 'वक्रतामय कवि-कौशलयुक्त मर्मस्पर्शी शब्दार्थ काव्य है।' यहां वक्रतामय या वक्रोक्ति से आशय है कि कवि तमाम शब्दों के बीच अपनी बात को कहने के लिए उसी शब्द का चयन करता है जो उसके अर्थ को पहुंचाने में सबसे ज्यादा समर्थ हो। जो विदग्ध है, कवि है, वह इस वक्रता-क्षमता से युक्त होता है। वक्रता उसके कहने का विशेष प्रकार है : वैदग्ध्य भंगी भणिति।

काव्यशास्त्री मम्मट ने अपने 'काव्यप्रकाश' ग्रन्थ में काव्य का लक्षण बताते हुए कई बातों को इकट्ठा कर दिया है। उन्होंने कहा है कि 'दोषरहित, गुणसहित, कभी-कभार अनलंकृत, शब्द और अर्थमयी रचना काव्य' है। उनका कथन है : तद्दोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृति पुनः क्वापि। मम्मट ने अलंकारों को बहुत जरूरी नहीं माना है। मम्मट की दोषरहित होने वाली बात की आलोचना की गयी है। अच्छे-से-अच्छे काव्य में भी दोष निकाला जा सकता है।

'साहित्य-दर्पण' लिखने वाले आचार्य विश्वनाथ ने रसयुक्त वाक्य को काव्य कहा है : वाक्यं रसात्मकं काव्यम्। रसात्मक वाक्य में शब्द और अर्थ दोनों हैं। इनका काव्य लक्षण रस की प्रतिष्ठा कराता है। अभिनवगुप्त ने भी रस को काव्य की आत्मा माना है।

17 वीं शताब्दी में, 'रसगंगाधर' ग्रन्थ में, पंडितराज जगन्नाथ ने फिर इस बात पर जोर दिया कि काव्य शब्द में होता है। उन्होंने कहा कि रमणीय अर्थ का प्रतिपादक शब्द ही काव्य है। उनका कथन है : रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्। लोगों की मान्यता है कि पंडितराज ने आचार्य विश्वनाथ के रस के स्थान पर रमणीयता शब्द का प्रयोग किया है और उनके मत को नकार दिया है। इस अस्वीकार में यह निहित है कि काव्य में रसानुभूति ही महत्वपूर्ण नहीं है बल्कि दूसरी अनुभूतियाँ भी आह्लाद देती हैं। यह पंडितराज का मौलिक सवाल साबित हुआ जिसका विस्तार आधुनिक काव्य-चिंतकों में दिखाई देता है।

© Dr. Amrendra N. Tripathi, SGGS College

काव्य-लक्षण पर चिंतन करने की एक लम्बी परम्परा संस्कृत काव्यशास्त्रियों के रूप में हमारे सामने मौजूद है। इसमें काव्य को देखने की कई दृष्टियां हैं। ये दृष्टियां शब्द और अर्थ को लेकर एक दार्शनिक बहस साबित होती हैं। यह बहस इसी अर्थ में आधुनिक और प्रासंगिक भी है। इस विमर्श परंपरा का आधुनिक आयाम हमें पंडितराज जगन्नाथ के रूप में दिखाई देता है।

© Dr. Amrendra N. Tripathi, SGGS College, Pataliputra University

© Dr. Amrendra N. Tripathi, SGGS College